ए नेक करी मैं इसारत, याको आगे होसी बड़ो विस्तार।
थोड़े से दिन में देखोगे, वरतसी जय जयकार।। २५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने इस बात का थोड़ा इशारा किया है। आगे चलकर इसका बहुत बड़ा विस्तार होगा। अब थोड़े ही दिन में श्री प्राणनाथजी के नाम की जय-जयकार होगी।

साथ सुनो एक वचन, आवे बाई सकुंडल सकुमार।
रास खेल घर चलसी, भेले इन भरतार।। २६ ।।

हे मेरे सुन्दरसाथजी! मेरी एक बात सुनो। शाकुण्डल और शाकुमार बाई जब आएंगी तो जागनी रास का खेल खेलकर श्री प्राणनाथजी के साथ घर (परमधाम) चलेंगे।

कहे महामत ए सो खेल, जो तुम मांग्या था चित दे।
देख खेल हंस चलसी, घर बातां करसी ए।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! यह वही खेल है जिसे देखने की चाहना तुमने परमधाम में की थी। अब इस खेल को देखकर हंसते हुए घर चलेंगे और बातें करेंगे।

॥ प्रकरण ॥ ५५ ॥ चौपाई ॥ ६१२ ॥

राग श्री बसंत

आरती

भई नई रे नवों खंडों आरती, श्री विजिया अभिनंद की आरती।
प्रेम मगन होए उतारती, सखी आप पिया पर वारती।। १ ।।

सारे संसार को विजय कर (जीतकर) आनन्द देने वाले श्री प्राणनाथजी प्रगट हो गए हैं और सब सखियां प्रेम में मग्न होकर धनी के चरणों में समर्पित होकर आरती करती हैं। इस नई आरती की आवाज नौ खण्डों में गूंज रही है।

दुष्टाई सबों की संघारती, सुख अखंड आनन्द विस्तारती।
जन सचराचर तारती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। २ ।।

धर्मों के अगुवे त्रिदेव, देवी-देवता, आदि जो संसार को भटका रहे थे, उनकी दुष्टता मिटाकर अखण्ड सुख का आनन्द, चर और अचर सभी को दे रहे हैं और इस तरह से नई आरती की नौ खण्डों में ध्वनि गूंज रही है।

सैयां सब सिनगार साजती, मिने सूरत पिया की विराजती।
ए सोभा इतहीं छाजती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ३ ।।

सब सखियां पारलौकिक गुणों का सिनगार सजाती हैं। अपने हृदय में पिया के स्वरूप को बिठाती हैं और सुन्दर शोभा होती है। इस तरह से नौ खण्डों में इस नई आरती की गूंज हो रही है।

झालर अगनित बाजे ले बाजती, ब्रह्मांड में नौबत गाजती।
कलिजुग सैन्या सुन भाजती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ४ ।।

अनगिनत झालर (घण्टे) तथा बाजे बज रहे हैं। पूरे ब्रह्माण्ड में नौबत की ध्वनि गरज रही है। जिसकी आवाज से कलियुग की सेना काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार सब भागते हैं। इस तरह की नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हो रही है।

Nijanand App

सप्तधात सुन्य मण्डल थाल, निरंजन जोत भई उजाल।
झलहलिया इत नूरजमाल, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ५ ।।

जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश, मन और बुद्धि की सात धातुओं से बना यह शून्य मण्डल रूपी थाल है जिसमें आदि नारायण की ज्योति जल रही है। ऐसे इन्द्रावती के तन में अक्षरातीत (नूर जमाल) शोभायमान हैं। जिनकी नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हो रही है।

पसरी दया प्रगटे दयाल, काटे दुनी के करम जाल।
चेतन व्यापी भए निहाल, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ६ ।।

पारब्रह्म प्रगट हुए हैं और उनकी मेहर (कृपा) का विस्तार फैल रहा है। इससे दुनियां के कर्मकाण्डों का जाल समाप्त हो गया है। संसार के जीव जिनके अन्दर आदि नारायण व्यापक हैं वह भी खुश हो गए हैं। ऐसी नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैल रही है।

सैन्या सहित आए त्रिपुरार, आए ब्रह्मा पढ़त मुख वेद चार।
विष्णु बोलत बानी जय जय कार, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ७ ।।

श्री प्राणनाथजी के सामने देवी-देवताओं की मण्डली सहित ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आए। ब्रह्माजी अपने चार मुखों से चार वेदों का उच्चारण कर रहे हैं तथा भगवान विष्णु सबके अन्दर बैठकर जय-जयकार बोल रहे हैं। इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैल रही है।

आए धरमराए और इंद्र वरुन, नारद मुन गंधर्व चौदे भवन।
सुर असुरों सबों लई सरन, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ८ ।।

धर्मराज, इन्द्र, वरुण, नारदमुनि, गंधर्व, आदि चौदह भवन में गीत गाने वाले, हिन्दू और मुसलमान, सुर और असुर सभी ने श्री प्राणनाथजी की शरण ली है। इस तरह से एक नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैल रही है।

आए सनकादिक चारों थंभ, लिए खड़े संग विष्णु ब्रह्मांड।
जो ब्रह्म अनभवी भए अखंड, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ९ ।।

ज्ञान के चारों स्तम्भ सनकादिक ऋषि आए हैं। शेषशायी नारायण जिन्होंने ब्रह्माण्ड को सिर पर धारण कर रखा है और जिनको पारब्रह्म की पहचान हो गई है, वह भी शरण में आए। इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैली।

जिन हद कर दई नवधा भगत, जुदी कर गाई पाई प्रेम जुगत।
यों आए सुक व्यास बड़ी मत, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १० ।।

जिन्होंने नवधा भक्ति को हटाकर प्रेम लक्षणा भक्ति का ज्ञान दिया, ऐसी बड़ी मत वाले शुकदेव और व्यासजी भी शरण में आए। इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैली।

आए नवनाथ चौरासी सिध, बरस्या नूर सकल या बिध।
इत आए बुधजी ऐसी किध, भई नई रे नवों खंडों आरती।। ११ ।।

नौ नाथ और चौरासी सिद्ध आए। चारों तरफ जागृत बुद्धि के ज्ञान की वर्षा हो रही है। बुधजी (श्री प्राणनाथजी) ने आकर ऐसी कृपा की, जिनकी इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हो रही है।

Nijanand App

आए चारों संप्रदा के साधूजन, चार आश्रम और चार वरन।
चारों खूटों के आए गावते गुन, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १२ ।।

चारों सम्प्रदाय (रामानुज, नीमानुज, विष्णु श्याम और माधवाचार्य) के साधुजन आए। चारों आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास) के तथा चारों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र और वैश्य) के लोग चारों खूटों से बुधजी श्री प्राणनाथजी के गुण गाते हुए आए और इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हुई।

आए गछ चौरासी जो अरहंती, दत्तजी दसनामी जो महंती।
आए करम उपासनी वेदांती, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १३ ।।

जैन मुनि, चौरासी सिद्ध (अर्हन्त) दत्तात्रेय तथा दशनामी, तीर्थ, आश्रम, वन, पर्वत, सागर, पुरी, भारती और सरस्वती के संन्यासी एवं महन्त आए। कर्म और उपासना करने वाले तथा वेदान्ती भी आए। इस तरह से यह नई आरती नौ खण्डों में गूंज रही है।

आए खट दरसन खट सास्त्र भेदी, बहत्तर फिरके आए अथर वेदी।
आए सकल कैदी और बे कैदी, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १४ ।।

षट दर्शन (न्यायिक, योगशास्त्र, सांख्य, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त) के छः आचार्य (गौतम, पातंजलि, कपिल, कणाद, जैनमुनि और व्यास) आए। अथर्ववेद के मानने वाले आए और मुसलमानों के बहत्तर फिरके आए। रीति-रिवाज मानने वाले और न मानने वाले सभी आए। इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में फैली।

बुध जी की जोतें कियो प्रकास, त्रैलोकी को तिमर कियो नास।
लीला खेलें अखंड रास विलास, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १५ ।।

श्री प्राणनाथजी की जागृत बुद्धि के ज्ञान का प्रकाश फैला, जिससे चौदह लोकों का अन्धकार मिटा। अब सब अखण्ड लीला (जागनी रास लीला) का आनन्द ले रहे हैं। इस तरह से इस नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हो रही है।

पिया हुकमें गावें महामत, उड़ाए असत थाप्यो सत।
सब पर कलस हुओ आखिरत, भई नई रे नवों खंडों आरती।। १६ ।।

श्री प्राणनाथजी के हुकम से ही महामतिजी ने असत (अज्ञान) को उड़ाकर सत (ज्ञान) की स्थापना की। यह दुनियां के सभी ज्ञान के ऊपर कलश के समान हो गया। इस तरह से नई आरती की गूंज नौ खण्डों में हुई।

॥ प्रकरण ॥ ५६ ॥ चौपाई ॥ ६२८ ॥

भोग-राग श्री काफी

कृपा निध सुन्दरवर स्यामा, भले भले सुंदरवर स्याम।
उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम।। १ ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) के धनी श्री राजजी महाराज कृपा के सागर, धाम के धनी संसार में आए, इससे अपार सुख हुआ।

Nijanand App